

पाठ 2— अध्याय 1

जब हम तोरह की नई किताब में प्रवेश करते हैं, तो हमेशा कुछ प्रारंभिक बातें होती हैं जिनसे निपटना होता है ताकि हम चीजों को उचित परिप्रेक्ष्य में देख सकें। यदि आपने गिनती का परिचय नहीं सुना है तो मेरा सुझाव है कि आप सीडी खरीद लें या वेब पर इसे सुनें, क्योंकि इसमें कुछ महत्वपूर्ण बुनियादी बातें बताई गई हैं जो आपके अध्ययन को लाभ पहुँचाएँगी।

यह लगभग 1350 ईसा पूर्व की बात है जब इस्राएल माउंट सिनाई को छोड़ने की तैयारी कर रहा था। मिस्र में 400 साल बिताने के बाद, उस समय की आखिरी 2 शताब्दियों मिस्र के दास श्रम बल के रूप में, परमेश्वर ने आखिरकार उन्हें उनकी दुर्दशा से बचाया है। इस बचाव के लिए इस्तेमाल किया गया बाइबिल शब्द मोचन है; और ऐसा इसलिए है क्योंकि मिस्र से उनके पलायन में जो कुछ हुआ वह सिर्फ एक बड़े पैमाने पर जेल से भागने से कहीं अधिक था।

मुक्ति मूल रूप से एक आध्यात्मिक मुद्दा है, और इसलिए मुक्ति तोरह के शेष भाग के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है। यह नए नियम की हमारी समझ के लिए एक महत्वपूर्ण ईश्वर—सिद्धांत भी स्थापित करता है: **पहले** मुक्ति आती है **और फिर** समझ और संबंध आते हैं। मैं इस कुछ हद तक विवादास्पद कथन को दोहराऊँगा जिसका मैंने अन्य समयों में उल्लेख किया है: तोरह के नियम और आदेश, और उस मामले के लिए पूरी बाइबिल (पुराना नियम या नया नियम), **गैर**—विश्वासियों के लिए पालन करने के लिए नहीं हैं, यह केवल पहले से ही मुक्ति प्राप्त लोगों के लिए है। एक बार जब हम मुक्ति पा लेते हैं, **तो** हम ईश्वर के साथ अपने रिश्ते को विकसित करना शुरू कर सकते हैं, जिसमें न केवल उन पर भरोसा करना शामिल है, बल्कि उनकी आज्ञाओं का पालन करना भी शामिल है। गलती तब होती है जब हम सोचते हैं कि हम ईश्वर के नियमों का पालन एक नुस्खे या चेक—ऑफ सूची की तरह कर सकते हैं ताकि ईश्वर के बच्चे बन सकें। वास्तव में शायद ईश्वर के वचन का सबसे बड़ा अनकहा सबक यह है कि ईश्वर के नियम केवल उन लोगों के लिए हैं जो उन पर भरोसा करते हैं।

रिडीम या रिडेम्पशन शब्द से भ्रमित न हों; इसका अर्थ मूलतः चर्च के शब्द "मुक्ति" के समान ही है। इसलिए जब हम तोरह और बाइबिल की अन्य पुस्तकों का अध्ययन करते हैं तो आप रिडेम्पशन और मोक्ष शब्दों को बहुत हद तक स्वतंत्र रूप से बदल सकते हैं। एकमात्र वास्तविक अंतर यह है कि मोक्ष ने इस विश्वास को शामिल करने का अर्थ ग्रहण कर लिया है कि यह यीशु मसीहा है जिसने हमें हमारे पापों से छुड़ाया है, लेकिन एक सामान्य और विशुद्ध साहित्यिक दृष्टिकोण से, रिडेम्पशन और मोक्ष का अर्थ मूल रूप से एक ही बात है। और ध्यान दें, व्यवस्था ने

इस्राएल को छोड़ा नहीं; परमेश्वर ने उन्हें छोड़ा और फिर कुछ समय बाद उसने उन्हें व्यवस्था दी।

आइए हम तोरह में स्थापित ईश्वर-पैटर्न का अनुसरण करें। याद करें कि जब इस्राएल को बचाया गया, छोड़ा गया, तो सबसे पहला काम जो ईश्वर ने किया, वह था उन्हें उन सभी चीजों से दूर करना जिनसे वे परिचित थे; मिश्र। एक क्रूर और दुष्ट कार्यपालक की गुलामी खत्म हो गई थी, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि कठिनाई और चुनौती समाप्त हो गई थी। अपने पलायन के शुरुआती चरणों में ही अज्ञात के डर और असुरक्षाओं ने कुछ इब्रानियों को वापस लौटने के लिए प्रेरित किया था; अपनी नई मिली आजादी को त्यागना और खुद को उस भयानक गुलामी से जोड़ना जिसे वे जानते थे लेकिन कुछ हद तक सहज थे बजाय इसके कि वे खुद को पूरी तरह से ईश्वर के अधीन कर दें। उनकी छवि में पुनः ढाला और बनाया गया (जो कि, सर्वोत्तम परिस्थितियों में भी, अपने आप में एक लम्बी और कभी-कभी भयावह प्रक्रिया है)।

एक बार जब प्रभु ने इस्राएलियों और उनके अतीत के बीच कुछ दूरी बना दी, तो अगला काम जो उसने किया वह था उन्हें पवित्रता, अपनी पवित्रता के बारे में **सिखाना**। और यह उसी तोरह के माध्यम से पूरा हुआ जिसका हम अभी अध्ययन कर रहे हैं। माउंट सिनाई के शिखर पर परमेश्वर ने मूसा को इस्राएल के लोगों को देने के लिए कई अध्यादेश और नियम, कानून और आदेश दिए; अन्यथा जो लोग परमेश्वर को नहीं जानते थे वे कैसे जान पाते कि वह कौन है और वह अपने उपासकों से क्या अपेक्षा करता है?

हालाँकि आधुनिक ईसाई तोरह के उन 613 नियमों के बारे में सोचते हैं कि वे हमारे बारे में हैं, जो हमें करना है और जो नहीं करना है। वास्तव में वे हमें उसके बारे में सब कुछ बताते हैं। वे हमें बताते हैं कि बाइबिल का परमेश्वर कितना पवित्र और न्यायप्रिय है। वे हमें बताते हैं कि पवित्रता का अर्थ क्या है और यह कैसी दिखती है, वे हमें बताते हैं कि परमेश्वर कौन है और वह पूरी तरह से उम्मीद करता है कि जिन लोगों को उसने खरीदा है और जिनके लिए उसने पैसे दिए हैं, वे अपने पूरे जीवन में पवित्रता और न्याय की उसकी परिभाषा के अनुसार **प्रयास** करते रहेंगे।

मेरे प्यारे दोस्तों, 3300 साल पहले स्थापित यह सटीक पैटर्न आज भी विश्वासियों के चलने जैसा ही है। इस्राएल को परमेश्वर के **ज्ञान** से मुक्ति नहीं मिली थी; उन्हें परमेश्वर के कार्य से मुक्ति मिली थी। हमें मसीहा की ओर मुड़ने के लिए बौद्धिक रूप से भी राजी नहीं किया जा सकता है, यह हमारे ऊपर पवित्र आत्मा का **कार्य** है। फिर भी एक बार जब परमेश्वर की आत्मा का वह

कार्य हो जाता है, और एक बार जब रूआख हाकोदेश हमारे अंदर आ जाता है, तो आगे क्या होता है। कम से कम इसका यही उद्देश्य है। ज्ञान की हमारी खोज।

चर्च ने बहुत ज़्यादा यह संकेत दिया है कि हमारे उद्धार के अनुभव के बाद हमें ईश्वर के बारे में जो भी ज्ञान प्राप्त होगा, वह किसी रहस्यमय तरीके से आएगा। कि हम अपनी कुर्सी पर बैठकर टीवी देख सकते हैं, और किसी तरह हमारे अवचेतन में पवित्र आत्मा हमें ईश्वर की पवित्रता और उससे जुड़ी चीज़ों की समझ प्रदान कर देगी। कि ईसाइयों के रूप में हमारे उद्धार के अनुभव के अलावा **कुछ भी मायने नहीं** रखता: कि ईश्वर के तरीकों को सीखने और अपने कर्मों और कामों से उनका अनुभव करने का प्रयास करना भी कुछ ऐसा है जिससे बचा जाना चाहिए। फिर भी यह किसी भी तरह से वह उदाहरण नहीं है जो हमें पवित्रशास्त्र, पुराने या नए नियम में दिया गया है।

तथ्य यह है कि हम मसीह के साथ संबंध बनाने के लिए अपने तरीके को बौद्धिक रूप से नहीं समझ सकते, जैसे कि हम पवित्रता के ज्ञान के लिए सो नहीं सकते। इस्राएलियों ने परमेश्वर की धार्मिकता और उसके नियमों के बारे में नहीं सीखा और फिर परिणामस्वरूप रणनीति बनाई और संगठित हुए और फिरौन के खिलाफ उठ खड़े हुए, और खुद को मुक्त किया यह सब प्रभु ने किया। फिर भी उनके उद्धार के बाद यह उम्मीद की गई थी कि वे पवित्रता और प्रकाश के तरीकों के बारे में सीखेंगे; पहले ज्ञान के द्वारा और फिर अपने जीवन के हर पहलू में जो उन्होंने सीखा था, उसके अनुसार कार्य करके।

मुझे आपसे कुछ और बातें करनी हैं और फिर हम साथ मिलकर गिनती का अध्याय 1 पढ़ेंगे। सबसे पहले, हमने अभी-अभी जो किताब पूरी की है, लैव्यव्यवस्था, वह पूरी तरह से परमेश्वर की पवित्रता की **घोषणा** और शिक्षा के बारे में थी। दूसरी ओर, गिनती उस ज्ञान को काम में लाने के बारे में है। लैव्यव्यवस्था परमेश्वर के नियमों और आज्ञाओं को उसके लोगों तक पहुँचाने के बारे में थी।

गिनती की पुस्तक हमें उसके लोगों के 40 वर्षों के जंगल में भटकने की ऐतिहासिक कहानी बताती है, जब उन्होंने ज्ञान प्राप्त कर लिया था (व्यवस्था प्राप्त करने के बाद)।

दूसरी बात जो मैं आपको बताना चाहता हूँ वह यह है आपने मुझे परमेश्वर के नाम का उच्चारण कई अन्य लोगों की तुलना में थोड़ा अलग तरीके से करते सुना है। मैंने उनके नाम पर काफी अध्ययन किया है क्योंकि इस पर बहुत विवाद है और आपने मुझसे इस बारे में कई बार पूछा है। और परमेश्वर के औपचारिक नाम, जो इब्रानी में लिखा जाता है, युद हेह वव हेह का

उच्चारण कैसे किया जाए, यह पूरी तरह से निश्चित रूप से जानने में कठिनाई यह है कि यहूदियों ने 2000 साल पहले इसका उच्चारण करना बंद कर दिया था और इसलिए कुछ हद तक उनके नाम की ध्वनि खो गई है। इसके अलावा जब हम इसे अंग्रेजी में उच्चारण करने का प्रयास करते हैं तो हम अंग्रेजी वर्णमाला की ध्वनियों के साथ इब्रानी अक्षरों की ध्वनि की नकल करने की कोशिश कर रहे होते हैं। इब्रानी शब्दों को अंग्रेजी शब्दों में बदलने की इस प्रक्रिया को लिप्यंतरण कहा जाता है।

मूल भाषा के सभी लिप्यंतरणों में समस्या यह है कि उनमें अक्षर, स्वर ध्वनियों और व्याकरण के नियम होते हैं, जिनका एक भाषा से दूसरी भाषा में कोई सीधा समकक्ष नहीं होता।

ऐसे शब्द और वाक्यांश और मुहावरे और यहाँ तक कि संपूर्ण अवधारणाएँ भी हैं जिनका इब्रानी और अन्य भाषाओं के बीच सीधा समकक्ष नहीं है। व्याकरण की दृष्टि से इब्रानी में ऐसे अक्षर हैं जिनका सीधा ग्रीक लैटिन या अंग्रेजी समकक्ष नहीं है। इब्रानी में भूतकाल जो भविष्यकाल नहीं है जैसा कि हम आमतौर पर इस्तेमाल करते हैं, क्योंकि अंग्रेजी और ग्रीक में काल का उपयोग उस क्रिया को रखने के लिए किया जाता है जिसका वे समय के संबंध में उल्लेख कर रहे हैं, जैसे कि था (भूतकाल), है (वर्तमान), और होगा (भविष्य)। इसके बजाय इब्रानी में पूर्ण और अपूर्ण काल का उपयोग किया जाता है।

ये संकेत देते हैं कि कोई कार्य पूर्ण है या अपूर्ण। और अक्सर उन इब्रानी काल को ग्रीक या अंग्रेजी में अनुवाद करते समय हम स्वचालित रूप से पूर्ण को भूतकाल और अपूर्ण को भविष्यकाल के बराबर मान लेते हैं, जो गलत है। इसलिए यह इब्रानी में जो पढ़ा जाता है उसका संदर्भ है, साथ ही काल, जो हमें बताता है कि कोई कार्य भूतकाल, वर्तमान या भविष्यकाल में था। और निश्चित रूप से यह सब लिप्यंतरण और अनुवाद के मुद्दों में हिमखंड की नोक मात्र है। तो हम कैसे तर्कसंगत और ईमानदारी से और (सबसे महत्वपूर्ण रूप से) श्रद्धापूर्वक परमेश्वर के नाम और हमारे उद्धारकर्ता के नाम के मामले से निपट सकते हैं?

मेरे पास उपलब्ध सर्वोत्तम इब्रानी और गैर यहूदी स्रोतों के आधार पर मैं आपको बता सकता हूँ कि चाहे हम प्रभु के नाम का उच्चारण कितनी भी सटीकता से करें, यह तीन अक्षरों वाले शब्द के अलावा और कुछ नहीं हो सकता।

यह बस बुनियादी इब्रानी व्याकरण का मामला है। जब एक इब्रानी शब्द युद्ध से शुरू होता है, और फिर 3 और मानक व्यंजन के साथ आता है, तो आम तौर पर प्रत्येक व्यंजन को एक स्वर

ध्वनि की आवश्यकता होती है। इसलिए हमें युद हेह—यव हेह में तीन स्वर ध्वनियाँ होनी चाहिए परमेश्वर का नाम।

इसलिए, याह—वेह का उच्चारण कम संभव है क्योंकि इसमें 2 शब्दांश हैं और इसमें 2 स्वर ध्वनियाँ हैं। संभवतः यह हो वेह अधिक सही है। तो परमेश्वर को याह—वेह कहने का विचार कहाँ से आया? वास्तव में यह स्पष्ट नहीं है। कुछ लोग सोचते हैं कि याहवेह बस यह हो वेह शब्द का संकुचन है। संकुचन तब होता है जब हम कोई शब्द या वाक्यांश लेते हैं और उसे छोटा कर देते हैं, जैसे “नहीं” (दो शब्दांश) कहने के बजाय, हम “नहीं” कहते हैं, जो 1 शब्दांश है। कुछ संकुचन इसलिए नहीं हुए हैं क्योंकि शब्द की वर्तनी कैसी है, बल्कि इसलिए कि शब्द का उच्चारण कैसे किया जाता है; जब कोई यह—हो—वेह तेजी से कहता है, तो यह ग्रीक या अंग्रेजी बोलने वाले व्यक्ति को 2 शब्दांश शब्द की तरह लग सकता है। याह वेह कहना अंग्रेजी के 3 शब्दांश शब्द यहोवा के उपयोग के विरुद्ध विद्रोह का प्रतिनिधित्व भी कर सकता है। लेकिन, अंत में, याह वेह कहना संभवतः अच्छे इरादे वाले गैर—यहूदी विद्वानों की एक गलत धारणा से ज़्यादा कुछ नहीं है, जो मानक इब्रानी व्याकरण के नियमों को नहीं समझते थे या शब्द के बीच में बहुत ही सूक्ष्म “ओ” ध्वनि नहीं सुनते थे। पश्चिमी ईसाई धर्म में मानक शब्द यहोवा यह हो—वेह की वर्तनी के जर्मन तरीके से पैदा हुआ है, और फिर सदियों पहले इसे हमारे आम यहोवा में अंग्रेजीकृत किया गया था। इसलिए यहोवा परमेश्वर के नाम का एक बहुत ही उचित अंग्रेजी भाषा आधारित उच्चारण है, जब तक जैसा कि हम समझते हैं कि यहोवा कहना, मिखाइल नामक रूसी व्यक्ति को माइक कहने के बराबर है जिसे हम सामान्यतः नहीं करते।

अब, मसीहा के नाम के बारे में यीशुआ भी उसी समस्या से ग्रस्त है। जो परमेश्वर पिता के नाम से ग्रस्त है। विद्वानों को लंबे समय से पता है कि यीशु का इब्रानी नाम मूसा के शिष्य यहोशू के नाम के समान है, जिसने कनान पर विजय प्राप्त की थी। और इब्रानी में यहोशू को योशुआ कहा जाता है। वहाँ हम देखते हैं कि बीच में “ओ” जोड़ा गया है जो प्रभावी रूप से उसके नाम में एक और शब्दांश जोड़ता है जिसे योशुआ से संक्षिप्त किया गया है।

जहाँ तक जीजस नाम की बात है। इस नाम के बारे में कई झूठी कहानियाँ फैलाई गई हैं। सबसे आम बात यह है कि जीजस को ग्रीक देवता जीउस की वर्तनी से लिया गया है। यह सच नहीं है। सबसे पहले, जीउस को जीटा के साथ लिखा जाता है। जबकि जीजस के नाम में जीटा नहीं है।

हमारे पास अंग्रेजी में "यीशु का रूप है, जो एक मानक लिप्यंतरण प्रक्रिया के कारण है, जो मूल इब्रानी योशुआ से शुरू हुई, जो यीशुआ में संक्षिप्त हो गई, जिसे ग्रीक में, फिर लैटिन में और अंत में अंग्रेजी में लिप्यंतरित किया गया। यीशु नाम का उपयोग करना मूर्तिपूजकी या गलत नहीं है, लेकिन यह उस किसी भी चीज़ से बहुत दूर है जिसे उसने कभी इस धरती पर रहते हुए खुद को संदर्भित करते हुए सुना होगा।

ऐसा कहने वाले गैर-यहूदी ईसाइयों को यह समझना चाहिए कि यहूदी विश्वासियों से बात करते समय हमारे द्वारा यीशु शब्द का उपयोग करना उनके लिए इस तथ्य के प्रति पूर्ण असंवेदनशीलता दर्शाता है कि भले ही हम मसीहा के सच्चे, ऐतिहासिक, दिए गए इब्रानी नाम (यीशुआ) को जानते हैं और आसानी से उसका उच्चारण कर सकते हैं, फिर भी हम उसे उसके यहूदीपन से दूर करने और उसके लिए एक पूरी तरह से गैर-यहूदी नाम का उपयोग करने पर जोर देकर उसे और अधिक गैर-यहूदी जैसा बनाने का चुनाव करते हैं, यीशु। मुझे गलत जानकारी वाले लोगों ने यह भी बताया कि यीशुआ कहना ईशानिंदा है क्योंकि उसका नाम यीशु है।

व्यक्तिगत रूप से मैं यीशु को ज़्यादा पसंद करता हूँ क्योंकि यह उनकी अपनी संस्कृति में उनका दिया गया नाम था। जब मैं किसी विदेशी देश की यात्रा करता हूँ और वहाँ के लोगों से बात करता हूँ, तो स्वाभाविक रूप से मैं उनके नाम का इस्तेमाल करता हूँ क्योंकि यह उनकी भाषा में है। लेकिन इसी तरह जब कोई विदेशी यहाँ आता है, तो मैं उनके नाम का भी इस्तेमाल करता हूँ क्योंकि यह यहाँ की उनकी भाषा में है। अगर कोई व्यक्ति अमेरिका जाता है और यह तय करता है कि वह अपना नाम पश्चिमी भाषा परंपराओं को दर्शाने के लिए बदलना चाहता है, तो यह ठीक है।

अब यह एक और बात है कि हमें ईश्वर का नाम लेना चाहिए या नहीं। मैं व्यक्तिगत रूप से इसके विरुद्ध कोई शास्त्रीय निषेध नहीं देखता, सिवाय इसके कि हम इसका असम्मानजनक रूप से उपयोग करें, लेकिन मैं समझता हूँ कि कुछ लोग इसे अलग तरह से क्यों देखते हैं। इसलिए जब मैं इस्राएल या मुख्य रूप से यहूदी समूह में होता हूँ, तो उनके प्रति सम्मान के कारण मैं ईश्वर के लिए उनके अर्थों का उपयोग करता हूँ, जैसे कि हारोम या प्रभु।

लेकिन यहाँ तोरह क्लास में, जहाँ हमारे पास यहूदियों और गैर-यहूदियों का मिश्रण है, और हमारे पास कुछ लोग हैं जो इब्रानी और पुराने नियम से अधिक परिचित हैं और अन्य जो अभी शुरूआत कर रहे हैं। मेरे लिए ईश्वर और मसीहा के नाम के कई रूपों का उपयोग करना और उनकी तुलना करना आवश्यक है। आखिरकार, आपके शिक्षक के रूप में, अगर मैं ऐसे शब्दों

का उपयोग कर रहा हूँ जो आप में से कुछ के लिए कोई मतलब नहीं रखते हैं, तो मैं संवाद नहीं कर रहा हूँ, मैं बस अपनी जीभ हिला रहा हूँ।

इसलिए जब मैं YHWH अक्षरों का उच्चारण करता हूँ जो परमेश्वर के नाम का निर्माण करते हैं तो मैं यह हो-वेह कहूँगा। कई बार मैं परमेश्वर का नाम नहीं बोलूँगा, बल्कि आधुनिक यहूदियों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले विभिन्न रूपों का उपयोग करूँगा, जैसे हाशेम या लॉर्ड या एदोनाई और कुछ अन्य दोनों हमारे यहूदी सदस्यों के प्रति सम्मान के कारण और हम गैर- यहूदियों के लिए सीखने के तरीके के रूप में। मैं जीजस और योशुआ के बीच भी बारी-बारी से बोलूँगा। मेरी व्यक्तिगत पसंद यीशुआ है क्योंकि यह एक आसानी से उच्चारित होने वाला नाम है जो हमारे यहूदी मसीहा का प्रमाणित सही ऐतिहासिक नाम है, लेकिन यीशु कहना निश्चित रूप से गलत नहीं है।

अब जबकि ये प्रारंभिक बातें हो चुकी हैं, आइए हम गिनती अध्याय 1 पढ़ें।

गिनती 1 सभी पढ़ें

इस पहले अध्याय का समय यह है कि यह जंगल में बने तम्बू के पूरा होने और याजकपद के अस्तित्व में आने के बाद का महीना है। इस्राएलियों को मिस्र से गए 13 महीने हो चुके हैं, जिसका मतलब है कि वे लगभग 1 साल से माउंट सिनाई के तल पर डेरा डाले हुए थे और उन्हें अभी भी आगे बढ़ना है।

इस दिन यहोवा सभी लोगों की जनगणना करने का आदेश देता है, और यही इस अध्याय का केंद्रबिंदु है। वास्तव में यह इस्राएलियों की जनगणना ही है जिसके कारण इस पुस्तक का अंग्रेजी शीर्षक, गिनती रखा गया। लेकिन शीर्षक के लिए यह एक भयानक विकल्प है और इससे अनभिज्ञ लोगों को लगता है कि यह पुस्तक सूचियों और सूक्ष्म विवरणों के बारे में है; वास्तविकता से इससे अधिक दूर कुछ भी नहीं हो सकता। इस पुस्तक का इब्रानी नाम बिमिदबार है, जिसका अर्थ है, "जंगल में"। और यह पुस्तक बिल्कुल इसी बारे में है: इस्राएल की जंगल यात्रा की कई कहानियाँ।

हालाँकि यह जनगणना के परिणामों से शुरू होता है, लेकिन यहाँ बहुत सी ऐसी जानकारी है जो प्रत्येक गोत्र की जनगिनती के अलावा हमारे लिए उपयोगी हो सकती है। उदाहरण के लिए, प्राचीन दुनिया में प्रत्येक महीने का पहला दिन आम तौर पर छुट्टी का दिन होता था (रोश होदेश, नया चाँद) और यह नियमित दिन होता था जब आदिवासी बुजुर्ग मिलते थे; और बैठक के बाद, समुदाय के बारे में निर्देश या निर्णय पूरी आबादी को बताए जाते थे।

अब तार्किक प्रश्न यह है कि परमेश्वर इस्राएलियों की जनगणना क्यों करवाना चाहता है? क्या वह नहीं जानता कि इस्राएलियों की गिनती कितनी है? इस जनगणना का उद्देश्य सेना का गठन करना है; यह सब युद्ध की तैयारी के बारे में है। जिस तरह उस युग में सभी ज्ञात समाजों में महीने के पहले दिन (नए चाँद) नेतृत्व की बैठक प्रथागत थी, उसी तरह युद्ध में जाने से पहले जनगणना करना भी आम बात थी। आम तौर पर युद्ध के **तुरंत बाद** भी जनगणना दोहराई जाती थी ताकि जानमाल के नुकसान का हिसाब लगाया जा सके और सेना की ताकत का पता लगाया जा सके। इसलिए हमें पद 3 में निर्देश मिलता है कि सभी इस्राएलियों की गिनती की जानी चाहिए और 20 वर्ष की आयु से ऊपर के प्रत्येक पुरुष को उसके गोत्र के अनुसार दर्ज किया जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, केवल कुल योग नहीं होना चाहिए, आँकड़ों को गोत्र दर गोत्र विभाजित किया जाना चाहिए। जिस तरह आज हर राष्ट्र की सैन्य सेवा के लिए न्यूनतम आयु होती है, आम तौर पर तब भी यही आयु थी और वह आयु 20 वर्ष थी। तुलना के तौर पर भविष्य में कुछ शताब्दियों में सैन्य भर्ती की रोमन आयु 17 वर्ष होगी। आधुनिक समय में वियतनाम युग के दौरान अमेरिका में यह 18 वर्ष था। कुछ यूरोपीय देशों में, 150 साल पहले भी, सैन्य सेवा के लिए आयु सीमा 12 और 13 वर्ष थी, जो इस बात पर निर्भर करती थी कि उनकी स्थिति कितनी विकट थी।

दिलचस्प बात यह है कि इस जनगणना के लिए कोई **ऊपरी** आयु सीमा निर्धारित नहीं की गई है। जब हम उस युग के अन्य समाजों को देखते हैं तो हम पाते हैं कि जब कोई विशेष रूप से महत्वपूर्ण युद्ध होने वाला होता है, तो बुजुर्गों के लिए सामान्य स्थगन को अलग रखा जाता है, और बुजुर्गों से अपेक्षा की जाती है कि वे युद्ध के प्रयासों में किसी भी तरह से योगदान दें, भले ही वह लड़ाई न हो, लेकिन, फिर भी उन्हें सेना का हिस्सा माना जाता था।

इसके अलावा यह जनगणना लोगों को उनके कबीलों के भीतर उनके परिवार इकाइयों के अनुसार अलग करके पूरी की गई थी। गिनती की पुस्तक (इब्रानी में बिमिदबार) हमें विशिष्ट इब्रानी सामाजिक संरचना दिखाने जा रही है और इस प्रकार हमें विभिन्न परिवार और सामाजिक इकाइयों का वर्णन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले कई इब्रानी शब्द मिलेंगे। सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले इब्रानी शब्दों में से एक जिसका अनुवाद हम आमतौर पर अंग्रेजी बाइबिल में "परिवार" के रूप में पाते हैं, वह है **मिश्याचा**। और शायद परिवार से बेहतर वैकल्पिक अनुवाद "कबीला" है। गोत्र के बारे में सोचने का सबसे अच्छा तरीका एक मध्यवर्ती आकार की सामाजिक इकाई के रूप में है, जो एक परिवार और पूरे गोत्र के बीच कहीं है।

अब पद 4 में मूसा को निर्देश दिया गया है कि जनजातीय सरदार (जिन्हें कभी-कभी 'राजकुमार' के रूप में भी अनुवादित किया जाता है) जो 12 गोत्रों में से प्रत्येक के मुखिया है, उन्हें उसकी सहायता करनी है। विचार यह है कि मूसा और हारून को जनगणना का यह काम प्रत्येक गोत्र के नेता को सौंपना है, और फिर गिनती हमें प्रत्येक गोत्र के लिए वर्तमान **नासी** का नाम देती हैं (**नासी** इब्रानी शब्द है जिसका उपयोग आमतौर पर सरदार या राजकुमार को इंगित करने के लिए किया जाता है, गोत्र का शीर्ष व्यक्ति)।

ताकि हम इस्राएली सामाजिक संरचना को बेहतर ढंग से समझ सकें, और एक व्यक्ति की पहचान करने के लिए बाइबिल के विशिष्ट तरीके पर अच्छी पकड़ बना सकें, आइए पद 5 में समूह में पहले नाम को देखें। यह इस्राएल के विभाजन के पहले स्तर की पहचान करके शुरू होता है; यह 12 गोत्रों में से एक की पहचान करता है, जो सभी मिलकर इस्राएल बनाते हैं; और, गोत्र को "रूबेन" कहा जाता है। उस गोत्र का वर्तमान सरदार एलीजूर नाम का कोई व्यक्ति है, और एलीजूर शेदेउर के परिवार या वास्तव में गोत्र से आता है। सामान्य तौर पर गोत्रों को कुलों में विभाजित किया जाता था, और गोत्र की इकाइयाँ शक्तिशाली होती थीं। इस प्रक्रिया को समझने का सबसे आसान तरीका उस व्यक्ति से शुरू करना है जिसने सबसे पहले गोत्र का गठन किया था, और फिर देखें कि यह कैसे आगे बढ़ता है। रूबेन, याकूब से पैदा हुआ पहला बेटा, रूबेन गोत्र का संस्थापक था। रूबेन के कई बच्चे थे। उसके प्रत्येक पुरुष बच्चे ने अपना परिवार शुरू किया होगा। 2 या 3 और पीढ़ियों के भीतर इतने लोग हो गए होंगे कि रूबेन के उन बेटों में से प्रत्येक को अब लोगों के गोत्र का मुखिया माना जाता होगा। तो अब कई कुलों के मुखिया हो गए होंगे जिन्होंने मिलकर रूबेन गोत्र बनाई होगी। फिर भी तथ्य यह है कि जब रूबेन (गोत्र का मुखिया) मर जाता था, तो उसके बेटों में से एक (उन गोत्र नेताओं में से एक) को उसकी जगह लेनी पड़ती थी। आम तौर पर, लेकिन हमेशा नहीं, यह गोत्र के नामित ज्येष्ठ पुत्र का मुखिया होता था जो पदभार संभालता था; और जब वह मर जाता था तो उसका ज्येष्ठ पुत्र पूरे गोत्र पर नियंत्रण कर लेता था, और इसी तरह आगे भी हालाँकि इस प्रक्रिया में गड़बड़ियाँ और अपवाद थे। कई पीढ़ियों के बाद शायद कोई ज्येष्ठ पुत्र और उसका परिवार बीमारी या युद्ध में खाम हो गया हो, या कोई दूसरा कबीला दूसरों से ज्यादा शक्तिशाली हो गया हो। इसलिए पूरे गोत्र के मुखिया की भूमिका संभालने की ज़िम्मेदारी दूसरे गोत्र के नेताओं में से किसी एक को सौंपी गई। यह कैसे तय किया जाता था यह अलग-अलग था लेकिन आम तौर पर यह इस बात पर निर्भर करता था कि कौन सा कबीला सबसे शक्तिशाली है। और जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं कि जब उत्तराधिकार

की सामान्य और प्रथागत रेखा बाधित होती थी तो बहुत साजिश और राजनीति होती थी (और कभी-कभी हत्या भी होती थी)।

इसलिए, यहाँ गिनती में प्रत्येक गोत्र का मुखिया कौन है, इसकी पहचान करने के लिए सबसे पहले गोत्र का नाम बताना है, फिर वर्तमान आदिवासी शासक का नाम बताना है, फिर यह बताना है कि गोत्र बनाने वाले कई कुलों में से यह विशेष आदिवासी शासक किससे था। इसलिए हमें इस तरह की सूची बनाने में सावधानी बरतनी चाहिए, उदाहरण के लिए, यह न मानें कि एलिजूर वास्तव में शेदेउर नाम के व्यक्ति का बेटा था; संभवतः शेदेउर एक बड़े गोत्र का नाम था और एलिजूर केवल शेदेउर गोत्र से था।

अतः जनजातीय सरदारों की सूची जनगणना पर्यवेक्षकों की सूची के रूप में भी काम करती है, और पद 17 में हमें बताया गया है कि मूसा और हारून ने सरदारों को यहोवा के निर्देशानुसार कार्य करने के लिए प्रेरित किया। इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, हम आपको बता दें कि जनगणना में भाग लेने वाली गोत्रों की सूची में एक महत्वपूर्ण गोत्र का नाम गायब है, वह है लेवी गोत्र। हम जल्द ही इसका कारण पता लगाएँगे।

पद 20 से जनगणना के परिणामों की घोषणा आरम्भ होती है, जो अगले 22 पदों तक जारी रहती है। और गिनती पर्याप्त हैं। याद रखें कि ये गिनती इस्राएल की कुल जनगिनती नहीं हैं, बल्कि ये 20 वर्ष या उससे अधिक आयु के पुरुष जनगिनती की हैं (सामान्य तौर पर ये वे लोग थे जो युद्ध में भाग लेने के लिए उपयुक्त हैं)। इतिहास में इस समय सबसे बड़ी गोत्र जाहिर तौर पर यहूदा की थी, और इसमें 74,600 योद्धा थे। अगला सबसे बड़ा वास्तव में यूसुफ था। भले ही हमारे पास तकनीकी रूप से इस्राएली इतिहास में इस समय यूसुफ की कोई नामित गोत्र नहीं है, इसके बजाय यूसुफ का प्रतिनिधित्व उसके दो बेटों, एप्रैम और मनश्शे द्वारा किया जाता है। इसलिए हम एप्रैम और मनश्शे को एक साथ जोड़कर यूसुफ की कुल जनगिनती पर पहुँचते हैं, जो हमें कुल 72,700 तक ले आती है। जब हम तोरह और बाइबिल की अन्य सभी पुस्तकों का अध्ययन करते हैं जो बाद के दिनों की भविष्यवाणियों से निपटती हैं, तो हमें अक्सर याद दिलाया जाएगा कि एप्रैम और मनश्शे यूसुफ के लिए अनिवार्य रूप से अस्थायी (हालाँकि दीर्घकालिक) स्थान धारक हैं; कि विशेष दिव्य उद्देश्यों के लिए यूसुफ को दिए गए अधिकार और अधिकार कुछ समय के लिए एप्रैम और मनश्शे को हस्तांतरित कर दिए गए हैं। क्योंकि इस्राएल के 12 गोत्रों के ये मुद्दे न केवल इस्राएल बल्कि समस्त मानवजाति के अतीत, वर्तमान और भविष्य को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण

हैं, इसलिए हमें लगातार यह ध्यान रखना होगा कि एप्रैम और मनश्शे को अक्सर उनके पिता यूसुफ का प्रतिनिधित्व करने वाले समूह के रूप में देखा जाना चाहिए।

सैन्य योग्य पुरुषों की कुल गिनती 603,550 है। यह गिनती निर्गमन 38 में दर्ज की गई गिनती से बिल्कुल मेल खाती है, जब सभी सैन्य आयु वर्ग के पुरुषों पर आधा शेकेल कर एकत्र करने के उद्देश्य से जनगणना की गई थी। और निश्चित रूप से दोनों गणनाओं के बीच बहुत अंतर नहीं होना चाहिए था क्योंकि पहली जनगणना इस नई जनगणना से कुछ महीने पहले ही की गई थी। लेकिन जाहिर तौर पर यह उस तरीके से अलग तरीके से आयोजित की गई थी जिसे हम यहाँ गिनती में देख रहे हैं। पहले वाला पूरे इस्त्राएल राष्ट्र के लिए प्रायश्चित्त करने से संबंधित था, न कि पवित्र युद्ध के लिए सेना बनाने से। इसलिए निर्गमन जनगणना में गोत्र के अनुसार कोई विभाजन नहीं था, न ही प्रत्येक पुरुष का उसके गोत्र के अनुसार रिकॉर्ड किया गया था, बल्कि 20 वर्ष और उससे अधिक उम्र के सभी पुरुषों को एक साथ रखा गया था (इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे किस गोत्र या गोत्र या परिवार से संबंधित थे)।

हालाँकि, इस **बिमिदवार** जनगणना में, एक अलग उद्देश्य था; यह युद्ध क्रम स्थापित करना था। इसलिए गोत्र और गोत्र का महत्व था क्योंकि जिस गोत्र से कोई आता था, वह सबसे बुनियादी युद्ध इकाई को दर्शाता था जिससे वह संबंधित था और जिसके साथ लड़ा जाता था। आप में से जिन्होंने अमेरिकी गृह युद्ध का अध्ययन किया है, वे जानते होंगे कि सैनिकों की अधिकांश भर्ती राज्य (या यहाँ तक कि काउंटी) के आधार पर की गई थी जहाँ से कोई आया था। युद्ध में शामिल होने वाले प्रत्येक राज्य से युद्ध प्रयास में एक निश्चित गिनती में सैनिकों का योगदान करने की अपेक्षा की जाती थी। इसलिए इन गृह युद्ध इकाइयों को आमतौर पर या तो राज्य या काउंटी के अनुसार नामित किया जाता था, क्योंकि वे मुख्य रूप से उस विशेष राज्य या काउंटी से आने वाले पुरुषों से बनी थीं। इसलिए अगर आज ऐसा हो रहा होता तो हमारे पास मेरिट आइलैंड रेजिमेंट होती जो मेरिट आइलैंड के पुरुषों से बनी होती, या ऑरलैंडो रेजिमेंट ऑरलैंडो क्षेत्र में रहने वाले पुरुषों से बनी होती। इसके कारण स्पष्ट हैं जो पुरुष एक-दूसरे को जानते हैं या परिवार हैं वे एक-दूसरे के प्रति अधिक वफ़ादार होंगे और एक साथ रहेंगे। और उन्हें ऐसा लगेगा कि वे उस भूमि के लिए लड़ रहे हैं जिससे उनका लगाव है और जिसमें उनकी हिस्सेदारी है, न कि किसी वैचारिक या दार्शनिक चीज के लिए, जैसे कि किसी राष्ट्र या संघ की आशा करना, जो उनके जीवन और अंगों के बलिदान से प्राप्त हो भी सकता है और नहीं भी।

यही विचार यहाँ गिनती में भी चल रहा है, जहाँ कोई व्यक्ति जिस कबीले और गोत्र से संबंधित है, वह स्वतः ही यह निर्धारित करता है कि वह किस युद्ध इकाई से संबंधित है। यह बहुत हद तक अकल्पनीय होगा कि यहूदा के गोत्र का कोई सदस्य, उदाहरण के लिए, दान के गोत्र के कमांडर के नियंत्रण में होगा। इसलिए प्रत्येक गोत्र की अपनी सेना होगी। जैसे ही इस्राएल कनान की भूमि पर विजय के लिए तैयार हुआ, स्थिति रेगिस्तानी तूफान या द्वितीय विश्व युद्ध जैसी होने जा रही थी, जहाँ हमारे पास अलग-अलग राष्ट्र भाग ले रहे थे, जिनमें से प्रत्येक की अपनी राष्ट्रीय सेनाएँ थीं जो अपने राष्ट्र के प्रति वफादार थीं, लेकिन एक समन्वित तरीके से सहयोगी के रूप में एक साथ लड़ रही थीं। यह (कहते हैं) वियतनाम से अलग है, जहाँ हमारे पास एक ही अमेरिकी सेना की अलग-अलग इकाइयाँ थीं जो एक झंडे के नीचे और एक ही कमांडर के साथ एक राष्ट्र के लिए लड़ रही थीं। राजा दाऊद के अधीन इस्राएल के एक एकीकृत राष्ट्र होने के विचार को आने में बहुत लंबा समय लगने वाला था। तब तक प्रत्येक इस्राएली गोत्र अलग-अलग राष्ट्रों की तरह दिखती थी और वे एक एकीकृत राष्ट्र की तुलना में एक दूसरे के सहयोगी के रूप में अधिक व्यवहार करते थे।

अब बिना किसी संदेह के, 603,500 लड़ाकों की यह विशाल गिनती इतिहासकारों और बाइबिल विद्वानों के लिए समस्याएँ प्रस्तुत करती है। क्योंकि अगर कोई यह अनुमान लगाए कि महिलाओं और बच्चों को शामिल करके इस्राएल की कुल जनगिनती कितनी रही होगी, तो यह गिनती संभवतः 2 मिलियन से ऊपर या संभवतः 3 मिलियन लोगों के करीब रही होगी। और, इस बात पर सभी तरह की अटकलें लगाई गई हैं, और पूरी तरह से अविश्वास किया गया है कि यह संभव था।

इन गिनतियों की रिपोर्टिंग में एक कथित "त्रुटि" को उचित ठहराने के लिए कई प्रयास प्रस्तावित किए गए हैं, जिसमें यह कहना शामिल है कि इब्रानी शब्द **एलेप** जिसका अनुवाद "हजार" के रूप में किया गया है, उसका अनुवाद "सौ" या यहाँ तक कि "परिवार" के रूप में किया जाना चाहिए था, यह कहना कि इन गिनती को बहुत बाद की अवधि में संशोधित किया गया था ताकि संशोधन के समय इस्राएल की जनगिनती को दर्शाया जा सके न कि मूसा के समय में। अन्य लोग कहते हैं कि यह केवल दंतकथाएँ होनी चाहिए क्योंकि ऐसा कोई तरीका नहीं है कि सिनाई 40 वर्षों तक 2 से 3 मिलियन लोगों का समर्थन कर सके क्योंकि सिनाई मूसा के दिनों में भी उतना ही रेगिस्तानी बंजर भूमि थी जितना कि आज है।

फिर भी, गिनती में सुझाई गई बड़ी आबादी के खिलाफ ज्यादातर विद्वानों के तर्क इस मुद्दे को पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष और व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखने से उपजते हैं, उन्हीं तरीकों का उपयोग करते हुए जैसे कि सभी बाइबिल की घटनाओं को देखते हुए जिसमें ईश्वर का "चमत्कार" ही एकमात्र संभावित उत्तर है। यानी, यह धारणा है कि "ईश्वर का चमत्कार" जैसी कोई चीज़ नहीं है और इसलिए सभी सबूत तर्कसंगत होने चाहिए या प्राकृतिक घटनाओं (भले ही दुर्लभ हों) और सत्यापन योग्य और परीक्षण योग्य वैज्ञानिक निष्कर्षों में निहित होने चाहिए। उस दृष्टिकोण से ये विद्वान सही हैं, ऐसा कोई भी सांसारिक तरीका नहीं है जिससे 20,000, 2,000,000 या उससे ज़्यादा की बात तो दूर, इस्राएली सिनाई के जंगल में 40 साल तक डेरा डाल सकें और जीवित रह सकें।

बाइबिल से जुड़े सभी मामलों की तरह आस्था भी मूल में है। अगर हम ईश्वर के चमत्कारों पर विश्वास नहीं कर सकते तो हम उन पर भरोसा भी नहीं कर सकते। जब ईश्वर के आदेश और कार्य मानवीय तर्क और संवेदनाओं को चुनौती देते हैं, तो हमारे पास एक विकल्प होता है: यहोवा पर विश्वास करें या अपनी बुद्धि पर विश्वास करें। भले ही हम पर उपहास किया जाए और हमारा मज़ाक उड़ाया जाए, लेकिन यह विचार कि कुछ मिलियन इस्राएली 40 साल तक सिनाई में रहे, मेरे लिए वास्तव में इस अवधारणा पर विश्वास करना आसान है कि ईश्वर स्वयं अपने स्वर्गीय सिंहासन से नीचे आए, चमड़े का सूट पहना और खुद को मनुष्यों के लिए असुरक्षित बना दिया। या कि वे यीशु मसीहा के रूप में धरती पर आए और हमारे अधर्म की कीमत चुकाने के लिए अपना जीवन त्याग दिया, हम उनके लिए इतने महत्वपूर्ण हैं कि वे ऐसा करेंगे। यदि आप उनमें से एक हैं जिन्होंने यीशु पर विश्वास करने का निर्णय लिया है तो आप उसी पर विश्वास करते हैं। और यदि आप उस पर विश्वास कर सकते हैं, तो बाकी सभी पर विश्वास करना आसान है। और मैं आपको यह बताने के लिए यहाँ हूँ कि आप यीशु पर भरोसा कर सकते हैं।

ईश्वर का वचन लेकिन सावधान रहें क्योंकि कभी-कभी विभिन्न अनुवादों में उनके अनुवादकों के प्राचीन और आधुनिक एजेंडे भरे होते हैं। लेकिन एक बार जब हम तोरह सीख लेते हैं तो उन एजेंडे को पहचानना और समझना बहुत आसान हो जाता है।

आज हमने गिनती के अध्याय एक पर अध्ययन की शुरुआत इस्राएलियों की जनगणना पर चर्चा करके की, जिसे यहोवा ने मूसा को लेने का आदेश दिया था। हमने जो बात देखी वह यह थी कि लेवी के गोत्र को गिनती से बाहर रखा गया था और अब तक हमें यह नहीं बताया गया है कि ऐसा क्यों किया गया। लेकिन हम यह भी पाते हैं कि लेवी के गोत्र को छोड़कर 20 वर्ष और उससे अधिक आयु के इस्राएली पुरुषों की गिनती आश्चर्यजनक रूप से 603,550 थी यह एक

बहुत बड़ी गिनती है, जो अगर सही है, तो इसका मतलब है कि जब इस्राएल राष्ट्र मिश्र से निकला और जब उसने माउंट सिनाई के नीचे मैदानों में डेरा डाला, तो उसकी जनसंख्या लगभग 2 से 3 मिलियन के बीच रही होगी।

अब यह सब ठीक है, लेकिन हम यह भी जानते हैं कि जो लोग इस्राएल के साथ मिश्र छोड़कर चले गए थे, उनमें से एक बड़ा हिस्सा इब्रानी नहीं था; वे मिस्री और सेमिट्स के विभिन्न समूह थे और कौन जानता है कि किस तरह की अन्य राष्ट्रीयताओं का समूह मिश्र में किसी न किसी कारण से उन विपत्तियों के समय था, जो परमेश्वर ने मिश्र पर बरसाई थीं। और ये विभिन्न लोग इस्राएल के परमेश्वर की शक्ति से इतने प्रभावित थे कि वे इस्राएल के साथ जुड़ना चाहते थे, ऐसे परमेश्वर की पूजा करने के लाभों का आनंद लेना चाहते थे, और मिश्र से वादा किए गए देश की ओर पलायन में भाग लेना चाहते थे।

तो सवाल यह है कि ये गैर इब्रानी इस मिश्रण में कहाँ और कैसे फिट होते हैं? क्या उन्हें जनगणना में एक गोत्र या किसी अन्य का हिस्सा माना गया था? संक्षिप्त उत्तर यह है कि हम नहीं जानते। हालाँकि, निश्चित रूप से यह एक मिश्रित बैग था। इनमें से कुछ विदेशियों ने इस्राएली पुरुषों या महिलाओं से विवाह किया था और इसलिए वे आसानी से 12 गोत्रों में से किसी एक के साथ जुड़े हुए थे और इस प्रकार अंतिम जनगणना के योग में शामिल हो गए होंगे। लेकिन वे विदेशी जो वंशावली से इस्राएल से जुड़े नहीं थे, और न ही उन्होंने इस्राएल में विवाह किया था, उन्हें एक विकल्प चुनना होगा 12 गोत्रों में से किसी एक के प्रति निष्ठा की घोषणा करें या इस्राएल के गैर-सदस्यों के रूप में साथ रहें। इस्राएल के गैर-सदस्य होने के कारण उन्हें जनगणना में नहीं गिना जाता। और उन्हें इस्राएल के शिविर में रहने की अनुमति नहीं दी जाती; बल्कि उन्हें इस्राएली शिविर की सीमाओं से बाहर अपने तंबू लगाने पड़ते। हमें यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि कितने लोग उस श्रेणी में आते। लेकिन, समझें इन विदेशियों का साथ देने के लिए स्वागत किया जाता था और उन्हें दुश्मन नहीं माना जाता था। निस्संदेह इन विदेशियों ने मूर्ति पूजा से संबंधित इस्राएल के अपराध में योगदान दिया (ऐसा नहीं है कि इस्राएल को उस क्षेत्र में बहुत मदद की जरूरत थी!)

पुनः पढ़ें गिनती 1:47 के अंत तक

यहाँ यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि लेवियों को सैन्य भर्ती के उद्देश्य से नहीं गिना जाना था। हम बाद में पाएँगे कि वास्तव में लेवियों की गिनती की गई थी, लेकिन इसका युद्ध प्रयास का हिस्सा होने से कोई लेना-देना नहीं था, और यहाँ जो कहा जा रहा है उसका सार

यही है। इस समय से आगे (जो अनिवार्य रूप से अनिश्चित काल के लिए है) लेवियों को इस्राएल के नियमित भाग के रूप में नहीं गिना जाना है। इसके बजाय उन्हें नवनिर्मित जंगल के तम्बू का प्रभारी बनाया जा रहा है। वह शानदार तम्बू मंदिर जो अगली कई शताब्दियों तक इस्राएल की पूजा और जीवन का केंद्र होगा। इसके अलावा लेवियों को इसे तब खोलना है जब आगे बढ़ने का समय हो और यात्रा के दौरान इसे अपने साथ ले जाना है और जब वे अपने अगले स्थान पर पहुँचते हैं तो इसे फिर से जोड़ना है।